

कब्र अर्थात पीर पूजा मूर्खता या अंधविश्वास?

लेखक : अग्निवीर

www.agniveer.com पर धर्म और इस्लाम के बारे में जानने के लिए
log in करें।

कब्र अर्थात पीर पूजा : मूर्खता या अंधविश्वास

आर्यजी और मौलाना साहिब की भेंट आज उद्यान में घूमते हुए हुई। मौलाना साहिब आज का समाचार पत्र साथ ले आये थे। एक खबर फिल्मी नायक-नायिका द्वारा आगामी फिल्म को हिट करने के वास्ते अजमेर स्थित ख्वाजा चिश्ती की दरगाह पर मन्नत माँगने की थी।

मौलाना जी अखबार दिखाते हुए बोले— आर्यजी, जो भी हो, चाहे मुस्लिम—चाहे हिन्दू हो, अगर अजमेर जाकर गरीब नवाज की दरगाह पर मन्नत माँगता है, चादर चढ़ाता है, गरीबों को दान देता है तो ख्वाजा उसकी जरूर सुनते हैं और उसे कामयाबी हासिल होती है। आप खुद देख लें हर वीरवार को हर शहर के कोनों में बनी हुई कब्रों, पीरों की दरगाहों पर कैसा मेला भरता है। और तो और ये स्थान हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रतीक भी बन गये हैं जहाँ दोनों धर्मों को मानने वाले आते हैं।

आर्यजी : मौलाना साहिब, अंधविश्वास और मूर्खता में क्या अंतर होता है?

मौ०सा० : आप कब्र पूजा को अंधविश्वास कहना चाहते हैं या मूर्खता कहना चाहते हैं?

आर्य जी : दोनों, कब्र पूजा न केवल अंधविश्वास है बल्कि मूर्खता भी है।

मौ०सा० : आप जरा विस्तार से समझाईये जनाब। हमारी समझ में आपकी बात नहीं आई।

आर्य जी : मैं कुछ मास पहले गर्मियों में बहराइच, उत्तर प्रदेश गया था। वहाँ गाजी मियाँ की प्रसिद्ध दरगाह पर हर वर्ष मेला

लगता है। वहाँ आने वाले हिन्दू—मुस्लिमों का मानना है कि गाजी मियाँ निस्संतान को औलाद, बेरोजगार को नौकरी, व्यापारी को आमदनी, छात्र को पढ़ाई में सफलता, औरतों को पति पर वश, मरीजों को दुरुस्ती बख्शाते हैं। उनकी दरगाह पर मन्नत माँगने वाले व चादर चढ़ाने वाले की हर इच्छा पूर्ण होती है।

मौ० सा० : यह अल्लाह द्वारा नेक फरिश्तों को बख्शी गई रहमत है जिनकी कब्रों पर मन्नत माँगने से दुआ कबूल हो जाती है।

आर्यजी : मौलाना साहिब, क्या आप जानते हैं कि ये गाजी मियाँ कौन थे?

मौ०सा० : नहीं जनाब आपसे ही सुना है।

आर्य जी : ये गाजी मियाँ भारत पर आक्रमण कर सोमनाथ मंदिर को विध्वंस करने वाले मोहम्मद गजनी के भांजे थे। इनका जन्म अजमेर में हुआ था। कालांतर में ये अपने पिता के साथ गजनी चले गये। सोमनाथ विध्वंस के पश्चात् कुछ हिन्दू सोमनाथ से लूटी गई मूर्तियों को लेने के लिए गजनी आये। मियाँ ने सोचा कि बुतपरस्ती इस्लाम के अनुसार नापाक है इसलिये उन हिन्दुओं को अपने पास बुला लिया। आपने मूर्तियों के वजन के बराबर सोना लाने की शर्त रखी। जब हिन्दू सोना लेने चले गये तो आपने सभी मूर्तियों को पिसवा कर उसका चूरा बनवा डाला। उस चूरे को पान व चंदन में मिला दिया। जब हिन्दू सोना लेकर वापिस आये तो आपने उनका स्वागत माथे पर चंदन लेप लगाकर व पान खिलाकर किया। सोना देकर हिन्दुओं ने गाजी मियाँ को मूर्तियाँ देने की दरखास्त की तो गाजी मियाँ ने बताया कि वो तो मैं आपको पहले दे चुका हूँ। आप पान और चंदन के लेप के रूप में उसे ले चुके हैं। यह सुनकर दुःख के मारे सारे हिन्दू वमन करने

लगे, कईयों ने प्राण त्याग दिये, कई रोते-बिलखते वापिस आ गये। गाजी मियां अपनी करनी पर प्रसन्न होता रहा। कुछ समय बाद गाजी मियां से बादशाह नाराज हो गया व वजीर के कहने पर गाजी मियां को देश निकाला दे दिया गया। इस देश निकाले को इस्लामिक आक्रमण का नाम देकर गाजी मियां ने भारत की ओर रुख किया। अनेकों मंदिरों का विध्वंस करते हुए हजारों हिन्दुओं का कत्ल करते हुए गाजी मियां ने बाराबंकी उत्तर प्रदेश में अपनी छावनी बनाई व अपने सिपाहसालारों को चारों तरफ लड़ने भेजा। बहराइच, मानिकपुर आदि के २४ हिन्दू राजाओं ने राजा सोहेल देव पासी के नेतृत्व में हिन्दू फौज को इकट्ठा कर गाजी मियां से टक्कर ली। जून की तपती दोपहर में दोनों फौजों का मुकाबला हुआ। गाजी मियां महुए के पेड़े के नीचे घोड़े पर सवार खड़ा था। राजा सोहेल देव ने एक बाण खींचकर मारा। गाजी मियां की तत्काल मौत हो गई। उसकी सारी सेना को मार डाला गया। हिन्दू राजाओं ने सोमनाथ विध्वंस का बदला गाजी मियां से ले लिया। उसकी लाश को उठाकर एक तालाब में फेंक दिया गया। कालांतर में फिरोज शाह तुगलक ने अपनी माँ के कहने पर वहाँ स्थित सूर्य कुण्ड को पाटकर एक दरगाह बनवा दी। उसे गाजी मियां की दरगाह के नाम से प्रसिद्ध कर दिया। इस दरगाह पर हिन्दू आज औलाद होने की दुआ मांगते हैं। वहाँ स्थित कुंड में डुबकी लगाने से बिमारी दूर होने की मान्यता प्रसिद्ध कर दी गई। कहो मौलाना साहिब आप उसे मूर्खता कहेंगे या अंध विश्वास?

मौ०सा० : भई मैं तो अजमेर स्थित गरीब नवाज की बात कर रहा था। आप तो बात को कहीं और ही ले गये।

आर्य जी : तो अजमेर चल पड़ते हैं। अच्छा ये बताइये की गरीब नवाज किसके साथ भारत आये थे?

मौ०सा० : मोहम्मद गौरी की फौजों के साथ।

आर्य जी : इतिहास साक्षी है मोहम्मद गौरी की सेना ने भारत में क्या कहर ढाया था तो उसके साथ आने वाले गरीब नवाज शांतिदूत कैसे हो गये?

मौ० सा० : आप बात को घुमा रहे हैं। आप बताइये गरीब नवाज ने कभी हथियार का इस्तेमाल किया हो। वे तो सदा अमन चैन और अल्लाह के बताये रास्ते पर चलने की सलाह देते थे।

आर्य जी : जिस समय गरीब नवाज अजमेर पधारे तब भारत पर हिन्दू राजा पृथ्वीराज चौहान राज्य करता था। अजमेर उसकी छावनी व महत्वपूर्ण केन्द्र था। गरीब नवाज अपने शागिर्दों के साथ आकर अजमेर में आनासागर झील नामक स्थान पर आकर रुके। उनके सेवकों ने एक गाय को मारकर उनके लिए कबाब बनाया। आनासागर के किनारे उस समय सैकड़ों मंदिर थे। ब्राह्मणों ने उनका विरोध किया। इस पर विवाद खड़ा हो गया जो राजा पृथ्वीराज तक पहुँच गया था।

मौ०सा० : पर मैंने तो सुना है कि गरीब नवाज पर प्रतिबंध लगाने की कोशिश राजा के अधिकारियों ने की तो गरीब नवाज को अपनी खुदापरस्ती का सबूत देने के लिए चमत्कार दिखाने पड़े। पहले तो पृथ्वीराज की सेना के ऊँट अपने स्थान से उठ नहीं पाये। राजा के अधिकारियों की विनती पर ख्वाजा ने उनको दुरुस्त कर दिया। ख्वाजा ने आनासागर स्थित एक मूर्ति को सजीव कर उससे कलमा पढ़ाया और उसका नाम सादि रख दिया व सभी तालाबों, कुओं का पानी सुखा दिया। यह खबर जब

पथ्वीराज तक पहुंची तो उसने अपने मंत्री जयपाल को, जो काले जादू का इस्तेमाल करता था, ख्वाजा को रोकने के लिए भेजा। जयपाल नाकामयाब हुआ। इस पर पथ्वीराज व जयपाल ने ख्वाजा से माफी मांगी। इससे ख्वाजा की रूहानी ताकतों व नेकदिली का पता चलता है।

आर्य जी : क्या आप मूर्ति के सजीव होने, तालाबों का पानी सूखने जैसी मनगढ़ंत बातों पर यकीन करते हो? सत्य तो यह है कि ख्वाजा ने पथ्वीराज चौहान के जिंदा पकड़े जाने व इस्लामिक सेना द्वारा बंदी बनाने के बारे में कहा था। कालांतर में जातीघातक राजा जयचंद के साथ देने पर पथ्वीराज को मोहम्मद गौरी हरा पाया। पहली बार तो गौरी को मुंह की खानी पड़ी थी। इससे गरीब नवाज धर्मनिरपेक्ष व हिन्दुओं के लिए महान किस प्रकार सिद्ध हुआ?

मौ०सा० : भई चर्चे तो और भी हैं पर नेकदिल इंसानों की कब्र पर मन्नत मांगने में बुराई ही क्या है?

आर्य जी : भारत में स्थित अधिकांश कब्रें उन मुस्लिम सिपाहियों या सरदारों की हैं जो हमारे पूर्वजों हिन्दुओं से लड़ते हुए मृत्यु के मुख में चले गये। वे हमारे देश पर आक्रमण करने आये थे। आप ही बताइये क्या किसी इस्लामिक देश में महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, बंदा बैरागी, हरी सिंह नलवा को महान बताकर उनके स्मारक बनाये गये हैं जहां मुस्लिम धर्म को मानने वाले आकर सजदा करते हों? प्रार्थना या मन्नत तो ईश्वर से मांगी जाती है जो सर्वरक्षक, सर्वशक्तिमान व इस सृष्टि का रचयिता है। गाड़े हुए मुर्दे, जिनकी लाश या तो मिट्टी बन चुकी हैं अथवा उनको कीड़े खा गये हैं, वे भला कैसे प्रार्थनाओं को पूरा करेंगे? और जहां तक

चमत्कारों का वर्णन करें तो हमारे श्रीकृष्ण तो अपनी छोटी उंगली पर पूरा गोवर्धन पर्वत ही उठा लेते हैं। पुराणों में वर्णित महर्षि कश्यप/अगस्त्य पूरे समुद्र के पानी को अपने पेट में भर लेते हैं जिससे कि समुद्र सूख जाता है। इतने बड़े चमत्कार करने वाले जब हमारे यहां विद्यमान हैं तो किसी और का दरवाजा खटखटाने की क्या आवश्यकता है। और जब हिन्दुओं के ३३ करोड़ देवी-देवता हैं तो उन्हें मुसलमानों की कब्रों पर सर पटकने की क्या आवश्यकता है? क्या हिन्दुओं का आर्य जाति के महान पुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम व योगीराज श्रीकृष्ण से विश्वास उठ गया है? क्या वेदों में वर्णित कर्म-फल सिद्धांत कि जो जैसा करेगा वैसा भरेगा को छोड़कर चमत्कार रूपी मिथ्यावाद का अंधानुकरण कर हिन्दुओं का कभी कल्याण हो सकता है?

मौ०सा० : आपकी बात में दम तो है आर्य जी, और इस्लाम बुतपरस्ती के खिलाफ है, पर मेरी भी समझ में नहीं आता कि इस्लाम को मानने वाले क्यों इन कब्रों को, दरगाहों को बनाते हैं और बुतों पर सजदा करते हैं?

आर्यजी : इसे ही तो अंधविश्वास और मूर्खता कहते हैं। धार्मिक मान्यताएँ तभी तक सार्थक एवं उपकारी होती हैं जब तक वे सत्य के निकट हैं। जब वे असत्य व अज्ञान से युक्त हो जाती हैं तब वे उनका अंधानुकरण करने वाले का सर्वनाश कर देती हैं। वेद में इसीलिए ईश्वर से श्रेष्ठ बुद्धि प्रदान करने की प्रार्थनाएँ हैं, जिससे व्यक्ति कब्रपूजा जैसे मूर्खतापूर्ण अंधविश्वास में पड़कर अपने जीवन को नष्ट न करे।

www.agniveer.com

पर

धर्म और इस्लाम

के बारे में

जानने के लिए

log in

करें।